प्रातः क्लास 18-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे समझते हैं हम आत्माओं को बाप समझाते हैं। और बाप अपन को आत्माओं का बाप समझते हैं। ऐसे कब कोई नहीं समझाते कि अपन को आत्मा समझो। यह बाप ही बैठ आत्माओं को समझाते हैं। इस ज्ञान को प्राप्त तुम नई दुनिया में लेने वाले हो नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह भी कोई सभी को याद नहीं रहता कि यह दुनिया बदलने वाली है। बदलने वाला बाप है। बहुत हैं जिनको इतनी समझ नहीं है। यहां तो सम्मुख बैठे हैं, जब घर में जाते हो तो सारा दिन अपने धंधे आद में ही लग जाते हैं। बाप के लिए तो समझाया है जैसे कन्या होता है, वह जानती नहीं है हमको पति कौन सा मिलेगा। चित्र देखती है तो उनकी याद ठहर जाती है। कहां भी जावेंगे फिर दोनो ही एक दो को याद करते हैं। उसको कहा जाता है शारीरीक जिसमानी प्यार। यह है रूहानी प्यार। रूहानी प्यार किसके साथ? बच्चों का रूहानी बाप के साथ और बेहद के बच्चों के साथ। बच्चों का बच्चों साथ भी प्यार चाहिए। यानि आत्माओं का आत्माओं साथ। यह शिक्षा भी अभी तुम बच्चों को मिलती है। दुनिया के मनुष्यों को कुछ भी पता नहीं है। तुम आपस में भाई2 हो। तो वह आत्माओं का प्यार है। सभी भाई2 भी आपस में जरूर प्यार करते हैं। क्योंकि एक बाप के बच्चे हैं ना। उनको कहा जाता है रूहानी प्यार। ड्रामा प्लैनअनुसार सिर्फ पुरुषोत्तम संगम युग पर ही रूहानी बाप आकर रूहानी बच्चों को सम्मुख समझाते हैं। और बच्चे भी जानते हैं कि बाप अभी परमधाम में नहीं हैं। वह यहां आये हुये हैं। हम बच्चों को गुल2 पवित्र, पतित से पावन बना कर सभी को ले जाते हैं। ऐसे नहीं कोई हाथ से पकड़ कर ले जाते हैं। सभी आत्मायें ऐसी उड़ेंगी जैसे पक्षियों का झुण्ड जाताहै। उन्हों का भी जरूर कोई गाईड होता है। गाईड के साथ और भी गाईड्स होते हैं। जो फ्रन्ट में रहते हैं। सारा झुण्ड जब इकट्ठा जाता है तो बहुत आवाज़ होता है। सूर्य के रोशनी को भी ढक देते हैं। इतना बड़ा झुण्ड होता है। तुम आत्माओं का तो कितना बड़ा अनगिनत झुण्ड है। असल वहां के रहने वाले हैं, यहां पार्ट बजाने आये हैं। असल में तुम सभी आत्मायें परमधाम के निवासी हो। यह भी ज्ञान अभी मिला है, कैसे आत्मायें यहां आकर पार्ट बजाती हैं। जब तुम देवतायें हो, वहां तुमको यह याद नहीं रहता कि फ्लाने2 धर्म की आत्मायें ऊपर में है। आत्मायें ऊपर से आती हैं यहां शरीर धारण कर पार्ट बजाती हैं। यह चिन्तन वहां नहीं चलता। यह भी बातें तुम अभी समझते हो हम आत्मायें परमधाम में रहने वाली हैं। आगे यह पता नहीं था। बाबा भी परमधाम में रहते हैं वहां से ही आकर इस शरीर में प्रवेश करते हैं। अभी वह किस शरीर में प्रवेश करते हैं वह पता तो बतला दो है। तुम लिखते भी हो शिव बाबा केअर आफ ब्रहमा। ऐसे नहीं लिखते हो शिव बाबा केअर परमधाम। परमधाम में तो चिट्ठी जा न सके। तुम लिखते ही हो परमपिता परमात्मा शिव बेक केअर आफ फिर यहां की एड्रेस डालते हो। क्योंकि तुम जानते हो बाप यहां है यहां ही आते हैं। कल्प2 बाप एक ही बार । कब गिनती नहीं कर सकते। यहां मनुष्यों की भी गिनती नहीं कर सकते हैं। अनगिनत हैं। भल मनुष्य आदमशुमारी निकालते हैं वह भी एक्युरेट नहीं निकालते हैं। आत्मायें कितनी हैं वह भी हिसाब कब निकाल नहीं सकते। यह तो ऐसे ही अन्दाजा लगाये लिख दिया है। बाप भी कहते हैं अन्दाजा लगाया जाता है कि सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य होंगे। क्योंकि सिर्फ भारत ही रहता जाता है। तुम्हारी बुद्धि में है हम विश्व के मालिक बन रहे हैं। आत्मा जब शरीर में है तब दोनो इकट्ठे (आत्मा और शरीर अर्थात जीवात्मा) सुख अथवा दुःख भोगती है। ऐसे बहुत सन्यासी लोग समझते हैं आत्मा ही परमात्मा है। वह कब दुःख नहीं भोगती। निर्लेप है। बहुत बच्चे इस बात में मुंझते हैं कि हम अपन को आत्मा निश्चय तो करें, फिर बाप को याद कहां करें? यह तो जानते हैं बाप परमधाम का निवासी है। सभी आत्माओं का बाप है। यह तो निश्चय है बाबा ने परिचय दिया है कहां भी चलते-फिरते बैठते बाप को याद करो। बाप रहते हैं परमधाम में। तुम्हारी आत्मा भी वहां के रहने वाली है। फिर पार्ट बजाने आती है तो यहां ही रहते हैं ना। आत्मा जानती है हम इस रथ में प्रवेश कर आते हैं। तुम लिखते भी

हो शिव बाबा को याद करती हो तो यहां करती हो ना। जब कि बाप यहां आये हैं तो तुम चिट्ठी भी यहां लिखते हो यहां ही याद करते हो। जिन जिन को परिचय मिला है, समझ मिली है बाप कहां है। बाप को हम कहां याद करें। यह ज्ञान तो मिल गया बाप यहां आये हुये हैं। बाबा अभी परमधाम में नहीं रहते हैं। बाबा यहीं रहते हैं। चिट्ठी भी तुम ऐसे लिखते हो शिव बाबा केअर ऑफ ब्रह्मा ·· कहां याद करेंगे। सिर्फ बुधि यहां ही जावेंगी शिव बाबा इस शरीर में आये हैं। यूं तो आत्मायें भी ऊपर में रहने वाली हैं। भाई2 हैं। बाप कहते हैं तुम आत्मायें भाई2 हो। सदैव ऐसे ही समझो। तो जरूर यहां समझेंगे ना। यह आत्मा है, इनका नाम फलाना है। आत्मा आत्मा को यहां देखती है। परन्तु मनुष्य देह अभिमान में आ जाते हैं। बाप देहीअभिमानी बनाते हैं। बाप कहते हैं तुम अपने को आत्मा समझो और मुझे याद करो। इस समय बाप समझाते हैं जब मैं यहां आया हुआ हूं इस शरीर में तो अभी ऊपर में नहीं हूं। यहां ही आकर बच्चों को ज्ञान भी देता हूं। तो जरूर यहां ही रहेंगे और प्रैक्टीकल में। उनको बोलना होता है। उनकी यह आरगन्स है। पुराने आरगन्स लिये हैं। बाप खुद कहते हैं मैं यह पुराना शरीर रूपी आरगन्स लेता हूं। जिसमें मुख्य यह मुख भी है आंखें भी हैं। ज्ञानामृत मुख से मिलता है। गऊमुख कहते हैं ना। अर्थात माता का मुख। यह है बड़ी माता। इन द्वारा तुमको एडाप्ट करते हैं। कौन? शिव बाबा तो यहां ही है ना। यह ज्ञान सारा बुधि में रहना चाहिए। बाप कहते हैं मैं तुमको प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा एडाप्ट करता हूं। तो यह मां भी हो गई ना। गाया भी जाता है तुम मात पिता हम बालक तेरे। तो वह सभी आत्माओं का बाप है। उनको माता नहीं कहेंगे। वह तो बाप है। बाप से वरसा मिलता है। फिर माता चाहिए यहां। वहां तो बाप है। वह यहां आते हैं। अभी तुमको मालूम पड़ा है। बाप ऊपर में रहते हैं। फिर यहां आते हैं पार्ट बजाने। दुनिया को इन बातों का कुछ भी पता नहीं है। वह तो ठिकर भितर में परमात्मा को कह देते। फिर तो अनगिनत हो जाये। इसको कहा जाता है घोर अंधियारा। गायन भी है ज्ञान सूर्य प्रगटा अज्ञान अंधेर विनाशा। इस समय तुमको ज्ञान है यह है रावण राज्य। जिस कारण अंधियारा है। वहां तो रावण होता ही नहीं। इसलिए कोई विकार नहीं। देह-अभिमान भी नहीं। वहां तुम आत्म-अभिमानी रहते हो। आत्माओं को ज्ञान है अभी हम छोटा बच्चा हैं। अभी जवान बना है। अभी बूढ़ा शरीर हुआ है इसलिए अभी यह शरीर छोड़ दूसरा नया लेना है। वहां ऐसे नहीं कहते कि फलाना मर गया। वह तो है ही अमरलोक। खुशी से एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। अभी आयु पूरी होती है यह छोड़ नया लेना है। इसलिए सन्यासी लोग सर्प का मिसाल देते हैं। मिसाल वास्तव में बाप का दिया हुआ है वह फिर सन्यासी लोग उठाते हैं। तब बाप कहते हैं यह जो ज्ञान मैं तुमको देता हूं यह प्रायः लोप हो जाता है। बाबा के अक्षर भी हैं, वह चित्र भी है। परन्तु जैसे आटे में लुन। तो बाप बैठ अर्थ समझाते हैं। जैसे सर्प पुराना खाल आपे ही छोड़ देता है और नई खाल आ जाते हैं। उनके लिए ऐसे नहीं कहेंगे एक शरीर छोड़ दूसरा में प्रवेश करते हैं। नहीं। खाल बदलने का एक सर्प का मिसाल है। वह खाल इसके देखने में भी आते हैं। जैसे कपड़ा उतारा जाता है वैसे सर्प खाल छोड़देता, दूसरी मिल जाती है। सर्प तो जीता ही रहता है। ऐसे भी नहीं सदैव अमर रहता है। दो तीन खाल खाल बदली करके मर जावेंगी। वहां भी समय पर तुम एक खाल छोड़ दूसरा ले लेते हो। जानते हो अभी हमको गर्भ में जाना है। सर्प तो गर्भ में नहीं जाता। वह सिर्फ खाल बदलते हैं। वहां तो है ही योगबल की बात। योगबल से ही तुम जाते हो इसलिए अमरकथा जाता है। आत्मा कहती है अभी मैं बूढ़ा हो गया हूं। शरीर पुराना हुआ है। सा० हो जाता है। अभी हम जाकर छोटा बच्चा बनुंगा। आपे ही शरीर छोड़ आत्मा भाग कर जो छोटे बच्चे में प्रवेश करती है। उस गर्भ को जेल नहीं, महल कहा जाता है। पाप तो कोई होता नहीं जो भोगना पड़े। गर्भ महल में आराम से रहते हैं। दुःख की कोई बात ही नहीं। न तो कोई ऐसी गंदी चीज़ आद ही खाते हैं जिससे बिमारी हो। यहां तो बहुत गंद खाते हैं। जिसका असर फिर अन्दर बच्चे पर पड़ता है। तो

18-7-68

3

बाप वहां की रसम आद भी समझा रहे हैं। अभी बाप कहते हैं बच्चे तुमको निर्वाणधाम जाना है। यह दुनिया बदलनी है। पुरानी से फिर नई होगी। हर एक चीज़ बदलती है। झाड़ से कितनी बीज़ निकलती है। फिर सूखी बीज लगाओ तो कितना फल निकलता है। एक बीज से कितनी डाली-टहनी निकलती है। सतयुग में एक ही बीज से एक ही बच्चा पैदा होता है। यो गबल से। यहां तो विकार से 5-7 बच्चे पैदा होते हैं। सतयुग और कलियुग मे बहुत फर्क है। बाप ही बतलाते हैं। नई दुनिया फिर पुरानी होती है। पुरानी कैसे होती है वह 84 जन्म भी समझाया है। यह भी बच्चों को समझाया बाबापरमधाम में नहीं हैं। जैसे हम आत्मायें यहां आकर शरीर लेती हैं तो वहां जगह खाली हो जाती है बाबा भी यहां आये हैं पढ़ानेतो वह जगह खाली हो गई। पहले तुम जाते हो या बाप जाते हैं बात एक ही है। जो भी आत्मायें जावेंगी हरेक अपने2 जगह मेंजाकर खड़ी रहेंगी। जगह बदलती नहीं है। अपने2 धर्म में अपने जगह पर नम्बरवार जाकर खड़ी होंगी। फिर नम्बरवार ही नीचे आना है। इसलिए छोटी माडल बनाकर रखी है मूलवतन की। वहां देवी-देवताओं का सेक्शन अलग है। सभी धर्मों का अपना2 है। यह तो समझ गये होदेवी देवतायें का है पहला धर्म। फिर नम्बरवार और आते हैं। नम्बरवार ही जाकर रहेंगे। तुम भी नम्बरवार पास होते हो। उन मार्कस केहिसाब से जगहलेते हैं। यह बाप की पढ़ाई कल्प में एक ही वारहोती है। पिछाड़ी में इम्तहान होता है। उसमें भी नम्बरवार होते हैं। तुम आत्माओं का कितना छोटा सिजरा होगा। जैसे यहां तुम्हारा इतना बड़ा झाड़ हैवहां भी ऐसे ही सेक्शन हैं। यह झाड़ आद भी तुम बच्चों ने दिव्य दृष्टि सेदेखकर फिरयहां बैठ बनाये हैं। आत्मा कितनी छोटी है। शरीर कितना बड़ा है। मनुष्यों को तो जगह चाहिए ना। सभी आत्मायें वहां जाकर बैठेंगी। बहुत थोड़े जगह में नजदीक जाकर रहते हैं। शोभेंगे भी तब। आत्माओं का कितना छोटा झाड़ होगा। यहां तो मनुष्यों का झाड़ कितना बड़ा है। मनुष्यों को तो जगह चाहिए ना चलने, फिरने घूमने आद का। नौकरी आद करने की सभी जगह चाहिए। निराकारी दुनिया में आत्माओं को कितनी छोटी जगह होगी इनके भेट में। इसलिए इन चित्रों में भी दिखाया है आत्मायें वहां बहुत छोटी2 रहती हैं। नम्बरवार ही आते हैं। यह बना बनाया नाटक है। शरीर छोड़ आत्माओं को वहां जाना होता है। तुम बच्चों की बुधि में है हम कैसे रहते हैं और दूसरे धर्म वाले कैसे रहते हैं। कैसे अलग2 हैं। फिर अलग2 आते हैं नम्बरवार। देवताओं के बाद इस्लामी, बौधी आद आते हैं। इनके पहले तो आ नहीं सकते। यहसभी बातें तुमको कल्प में एक ही वार बाप सुनाते हैं। बाकी तो सभी है जिसमानी पढ़ाई। उनको रूहानी पढ़ाई नहीं कह सकते। अभी तुम समझते हो हम आत्मा हैं। आई माना आत्मा। माई माना मेरा शरीर। मनुष्य यह नहीं जानते। उन्हों का तो सदैव शारीरीक सम्बन्ध ही रहता है। सतयुग मे भी शारीरीक सम्बन्ध होगा। परन्तु वहां तोतुम आत्म-अभिमानी रहते हो। यह पता पड़ता है कि हम आत्मा हैं। यह हमारा शरीर अभी बूढ़ा होगया है। इसलिए हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेते हैं। इसमें मुंझने करने की भी बात नहीं। तुम बच्चों को तो बाप से राजाई लेनी है जरूर। बेहद का बाप है ना। मनुष्य जबतक ब्राहमण बना नहीं है, ज्ञान को पूरा न समझा है, और भक्ति मार्ग वाले हैं तोप्रश्न ही भक्ति मार्ग के पूछेंगे। ज्ञान होता ही है तुम ब्राहमणों में। तुम ब्राहमणों का वास्तवमें मंदिर भी अजमेर है। एक होते हैं पुष्कर ब्राहमण। दूसरे होते हैं सारसद। अजमेर मेंब्रह्मा का मंदिर देखने जाते हैं। ब्रहमा बैठा हुआ है। दाढ़ी आद दी हुई है। उनको मनुष्य के रूप में दिखाते हैं। तुम ब्राहमण ही मनुष्य के रूप में हो। ब्राहमण को देवता नहीं कहा जाता। सच्चा2 ब्राहमण तुम हो ब्रह्मा के औलाद। उन्हों को यह पता नहीं है हम प्रजापिता ब्रहमा के औलाद हैं। पीछे आने वालों को यह मालूम नहीं पड़ता है। तुम्हारा जो विराटरूप हैयह भी बुधि में याद रहना चाहिए। यहसारी नालेज है जो तुम कोई को भी अच्छी रीत समझा सकते हो। हम आत्मा हैं। बाप के बच्चे हैं। यह यर्थात रीति समझ कर यह निश्चय पक्का2 होना चाहिए। यह तो यर्थात बात है सभी आत्माओं का बाप एक परमात्मा है। सभी उनको याद करते हैं

18.7.68

हैं हे भगवान, हे ईश्वर। मनुष्यों के मुख से जरूर निकलता है। परमात्मा कौन है यह भी कोई नहीं जानते हैं। जब तक बाप आकर समझावे। बाप ने समझाया है यह ल०ना० जो विश्व के मालिक थे यह ही नहीं जानते तो ऋषि-मुनि आद भी फिर कैसे जानते होंगे। अभी तुम ने बाप द्वारा जाना है। अभी तुम समझते हो हम हैं आस्तिक। बाकी सभी हैं नास्तिक। अभी हम रचयिता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। कोई अच्छी रीत जानते हैं कोई कम। बाप सम्मुख आकर पढ़ाते हैं फिर कोई अच्छी रीत धारण करते हैं, कोई कम धारण करते हैं। पढ़ाई बिल्कुल सहज है तो बड़ी भी है। बाप में इतना ज्ञान है जो सागर मस बनाओ, तो भी अन्त नहीं पा सकते। बाप बहुत सहज कर भी समझाते हैं। सिर्फ बाप को जानना है और स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। बस। जास्ती कुछ भी बात करने की दरकार नहीं रहेंगी। सेन्सीबुल जो होंगे वह झट दो अक्षर से ही समझ जावेंगे बरोबर बाप आकर स्वर्ग की स्थापना करते हैं। अभी तो हम नर्क में हैं। 84 लाख जन्म तो होता ही नहीं। बाकी हां 84 जरूर है। सतोप्रधान, सतो रजो तमो तमोप्रधान इन स्टेजस में सभी आते हैं। आधा कल्प में है सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी। फिर आधा कल्प के बाद फिर यह सभी आते हैं। बुद्धि काम करती है एक बार बाप का परिचय मिला और 84 का चक्र समझाया। फिनीश। रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का राज समझाया उस में सभी आ जाता है। बात तो बिल्कुल थोड़ी है। बाकी है डिटेल जिसमें टाईम लगता है। सतयुग में तुम बिल्कुल पवित्र रहते हो फिर त्रेता में दो कला कम हो जाती है। उनको सेमी स्वर्ग कहेंगे। स्वर्ग भी नहीं। मनुष्य तो स्वर्ग को भी नहीं जानते। स्वर्ग है ही नई दुनिया। त्रेता तो फिर 25% पुराना हो गया। आगे चल तुम्हारी जबप्रभाव निकलेगा तो गवर्मेन्ट आपे ही तुमकोमकान, कालेज आद देते रहेंगे। समझेंगे बरोबर यह तो तो सभी कीकैरेक्टर्स सुधारते हैं। यहां तो सभी कैरेक्टर्स बहुत खराब है। तुम्हारी है दैवी कैरेक्टर्स। उनका है आसुरी। तुम कहेंगे अभी इन सभी के कैरेक्टर्स सुधारो। तुमको बुलावेंगे। यह भी समझते हैं, सभी कीकैरेक्टर्स तोसुधरेंगी नहीं। तो भी बहुतों के सुधार सकते हो। पावन बनने से दैवी कैरेक्टर्स बन जाती है। पतित हैं तो आसुरी कैरेक्टर्स होती है। पावन बनने से दैवी कैरेक्टर्स बनते हैं। यह तुम जानते हो अभी तुम पवित्र बनते हो। तुम्हारी कैरेक्टर्स भगवान आकर सुधारते हैं। कोई-कोई मनुष्य नहीं है। तुम भगवान द्वारासुधर कर औरों को भी सुधारते हो। सिवाय ब्राह्मणों के और कोई कैरेक्टर्स सुधार न सके। इसके लिए ही हंगामे अत्याचार आद होते हैं। अभी दिन प्रति समय कम हो जाता है। पुरुषार्थ यही करना है एक के सिवायदूसरा कोई याद न रहे। मेरा तो एक शिव बाबा दूसरा न कोई। गन्धर्वी विवाह वाला युगल भी याद न रहे। एक शिव बाबा। बस। अन्त समय शिव बाबा की ही याद हो। वह लोग तो गाते हैं गंगा का तट हो, मुख में गंगा जल हो तब प्राण तन से निकले। क्योंकिपतित पावन गंगा को समझते हैं। अभी तुम समझते हो पावन बनाने वाला तो एक ही बाप है। तो एक सिवाय और कोई याद न रहे। यह मेहनत करनी पड़े। बाकी यह भोग आद लगाना यह न ज्ञान है न योग है। इन बातों से कोई कनुक्शन नहीं है। इसमें मुंझने की दरकार नहीं। अच्छा। बच्चों को याद प्यार गुडमार्निंग। नमस्ते।

(रही हुई पायन्टस):-तुम बच्चों को बाप बहुत प्यार से बैठ समझाते हैं। स्कूल में स्टुडन्ट भूल करते हैं तो टीचर सजा देते हैं। यहां बाप सजा नहीं देते। माया सजा दे देती है। पद भ्रष्ट कर देती है। जन्म-जन्मान्तर कल्प-कल्पान्तरलिए अगरतुम उल्टा काम करते हो तो। शिव बाबा को भी धोखा दे देते हैं। शिव बाबा की सर्विस को छोड़ा गोयाशिव बाबा को धोखा दिया। तो उनकी बहुत भारी सजा हो जाती है। अनेक प्रकार की डिससर्विस कर लेते हैं। बाप का हाथ तो कब नहीं छोड़ना चाहिए नहीं तो माया हप कर लेती है। परन्तु माया छूड़ा देती है। माया की ग्रहाचारी बैठती है तोखयालात आती है छोड़ने। जाकर यह करें। ऐसे करते भाग जावेंगे। बाबा भी (माया को) कहेंगेइनको कच्चा ही खाओ। छोड़ना नहीं। अच्छा ग्राहक मिला है। आश्चर्यवत भागन्ती ... यह तो गायन है ना। जो पास्ट हो गया है वह परजेन्ट होता है। तुम्हारी माया साथ लड़ाई है ना। आश्चर्यवत कथन्ती सुन्न सनन्ती फिर माया की चिन्तनपड़न्ती, माया हप करन्ती। अच्छा।